
Ratnakanksha

रत्नाकाङ्क्षा

Document Information

Text title : Ratnakanksha Desire for a Gem

File name : ratnAkAMkShA.itx

Category : misc, kathA

Location : doc_z_misc_general

Transliterated by : samskrit dot samvadah at gmail.com

Proofread by : samskrit dot samvadah at gmail.com

Translated by : samskrit dot samvadah at gmail.com

Latest update : April 6, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

April 6, 2024

sanskritdocuments.org

रत्नाकाङ्क्षा



एकस्मिन् नगरे एकः वीरः राजा आसीत् । स दयालुः कृपालुः च आसीत् । एकदा स स्नातुं सरस्तीरम् अगच्छत् । तत्र सः अपश्यत् सिंहेन एका मृगी गृह्यते । सः राजा सिंहं हत्वा मृगीं ररक्ष । तत्पश्चात् सा मृगी निजस्वरूपे प्रत्यागच्छत् । सा मृगी एका अप्सरा आसीत् या स्वपतिना सह विहारार्थम् अस्मिन् अरण्ये प्राविशत् ।

सा राजानं तस्याः प्राणरक्षार्थं यत्किञ्चिदपि याचनाय अवदत् । राजा विचार्य एकम् अद्वितीयं रत्नम् अयाचत । सा तं राजानम् अद्वितीयं रत्नं दत्वा अन्तरधीयत । राजा रत्नं प्राप्य अतीव प्रसन्नः बभूव । स प्रसन्नवदनं स्वराज्यम् अगच्छत् ।

स्वप्रासादे गत्वा स राज्ञीः तत् रत्नम् अदर्शयत् । रत्नं दृष्ट्वा सर्वासां राज्ञीनां हृदयेषु लोभः बभूव । तिसृभिः राज्ञीभिः तं प्राप्तुं प्रयासकर्मम् आरभ्यत ।

प्रथमा निजगुप्तचराय आदिशत् गच्छ तत् रत्नम् अत्र आनय इति । द्वितीया सुरूपतमा निजपत्युः निकटं गत्वा तस्मै उल्लपति स्म । तृतीया अन्ययोः राज्ञयोः भोजने विषम् अक्षिपत् ।

अत्र प्रथमायाः राज्ञ्याः गुप्तचरं रत्नं चोरयित्वा तस्यै ददौ । सा रत्नम् अगोपायत् भोजनं च कृत्वा अग्नियत । तथा द्वितीयायै रत्नं दातुं राजा वचनम् अयच्छत् । सा प्रसन्नतया स्वभोजनं राज्ञे अयच्छत् यत् भुक्त्वा सः अपि अग्नियत । राजा निजवचनं पूर्णम् अकृत्वा एव अग्नियत अतः सः प्रेतरूपेण भ्रमति । प्रथमा राज्ञी चौरकर्मात् नरकम् अगच्छत् । मन्त्रिणः तृतीयां राज्ञीं राजहत्यारोपेण देशात् बहिः अप्रेषयन् । तस्मिन् राज्ये राज्ञः अभावे गृहविद्रोहं बभूव । भयङ्करात् युद्धात् संपूर्णं राज्यं व्यनश्यत् । द्वितीया रूपवती राज्ञी शृङ्गारहीना सन्यासिनी च भूत्वा अवसत् । रत्नं कुत्र अस्ति । कोऽपि न जानाति ।

हिन्दी भावार्थ

एक नगर में एक वीर राजा था । वह दयालु और कृपालु था । वह एक बार वह तालाब के किनारे नहाने गया । वहाँ उसने एक शेर को एक हिरणी को पकड़ते देखा । राजा ने शेर को

मार डाला और हिरणी को बचा लिया तब हिरणी अपने रूप में लौट आयी । वह हिरणी एक अप्सरा थी जो अपने पति के साथ विहार के लिए इस जंगल में आई थी ।

उसने राजा से उसकी जान बचाने के लिए कुछ माँगने को कहा । राजा ने इसके बारे में सोचा और एक अनोखा रत्न मांगा । उसने राजा को एक अनोखा रत्न दिया और गायब हो गई । रत्न पाकर राजा बहुत प्रसन्न हुए वह हर्षित चेहरे के साथ अपने राज्य में चला गया ।

वह अपने महल में गया और रानियों को रत्न दिखाया । रत्न को देखकर सभी रानियों के हृदय लोभ से भर गए । तीनों रानियों ने उसे पाने का प्रयास शुरू किया ।

पहले ने अपने जासूस को जाकर रत्न को यहाँ लाने का आदेश दिया । दूसरी सबसे खूबसूरत महिला अपने पति के पास गई और उससे बहलाने लगी । तीसरे ने अन्य दो रानियों के भोजन में विष डाल दिया ।

यहां पहली रानी के जासूस ने वह रत्न चुराकर उसे दे दिया । उसने रत्न छिपा दिया और भोजन खाकर मर गई । और राजा ने दूसरी को रत्न देने का वचन दिया । उसने खुशी-खुशी अपना खाना उस राजा को दिया जिसने उसे खाया और वह भी मर गया । राजा अपना वादा पूरा किए बिना मर गया इसलिए वह भूत के रूप में भटकता है । पहली रानी चोरी के लिए नरक में गई । मंत्रियों ने तीसरी रानी को राजहत्या के आरोप में देश से बाहर भेजा । राजा की अनुपस्थिति में उस राज्य में गृहविद्रोह हो गया । एक भयानक युद्ध से पूरा राज्य नष्ट हो गया । दूसरी सुंदर रानी बिना अलंकरण के और एक सन्यासिनी के रूप में रहने लगी । रत्न कहाँ है? कोई नहीं जानता ।

Translation

There was a brave king in a city. He was kind and gracious. Once he went to the lakeside to take a bath. There he saw a lion catching a deer. The king killed the lion and saved the deer. Then the deer returned to her form. That deer was an nymph who entered this forest to play with her husband.

She told the king to ask for something for saving her life. The king thought about it and asked for a unique gem. She gave the king a unique gem and disappeared. The king was very pleased to receive the gem. He went to his kingdom with a cheerful face.

He went to his palace and showed the queens the gem. The hearts of all the queens were filled with greed at the sight of the gem. The three queens began the effort to obtain it.

The first ordered her spy to go and bring the gem to her. The second most beautiful woman went to her husband and coaxed him. The third threw poison into the food of the other two queens.

Here the spy of the first queen stole the gem and gave it to her. She hid the gem, ate the meal and died. and the king promised to give the gem to the second queen. She gladly gave her food to the king who ate it and died too. The king died without fulfilling his promise so he wanders in the form of a ghost. The first queen went to hell due to stealing. The ministers sent the third queen out of the country on charges of murder of the king. there was a revolt in that kingdom in the absence of the king. The whole kingdom was destroyed in a terrible war. The second beautiful queen lived without adornment and as a hermit. Where is the gem? No one knows.

Written and translated in Hindi and English by samskrit dot samvadah at gmail.com



Ratnakanksha

pdf was typeset on April 6, 2024



Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

